2-DAY HANDS ON TRANING IN RELEVANT MOLECULAR BIOLOGY TECHNIQUES REPORT

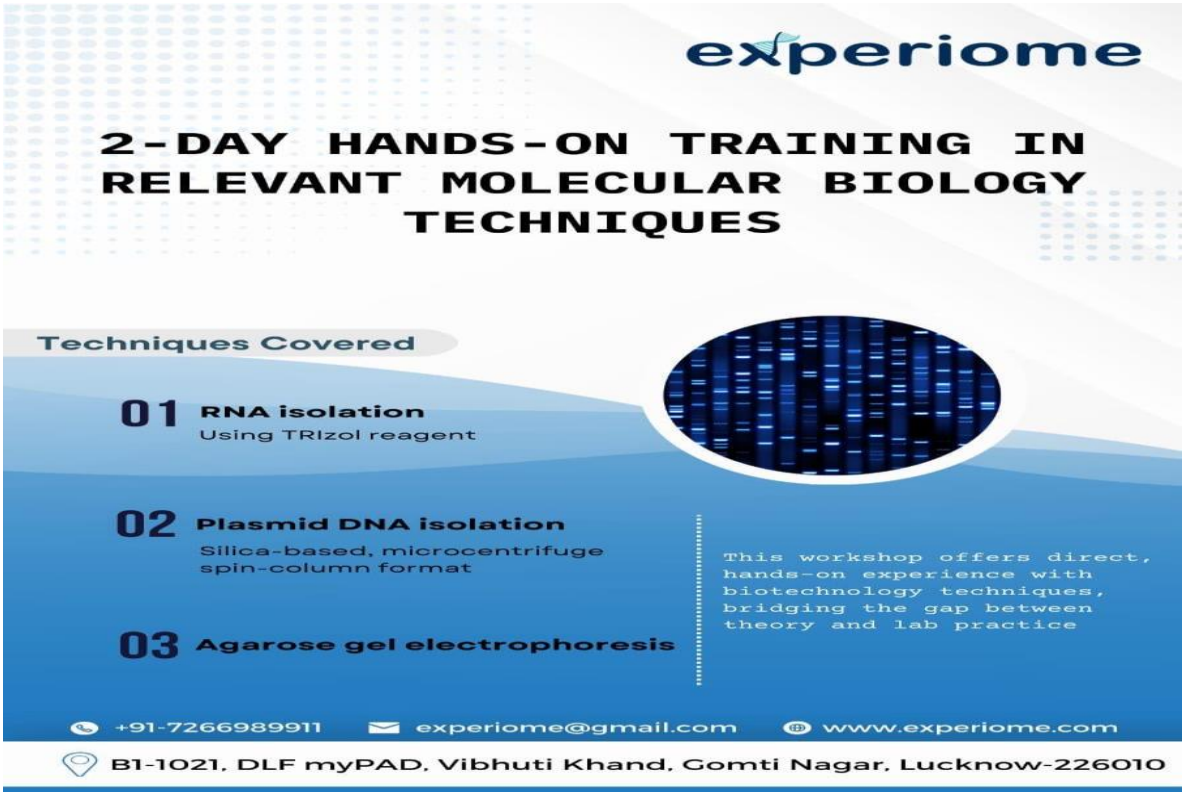

SUMMARY REPORT

ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय लखनऊ के फैकल्टी ऑफ फार्मेसी द्वारा माननीय कुलपति प्रो अजय तनेजा के कुशल दिशा निर्देश में दिनांक 13 एवं 14 अगस्त को एक्सपेरियोम बायोटेक प्राइवेट लिमिटेड, लखनऊ के सहयोग से "रिलेवेंट मॉलिक्यूलर बायोलॉजी टेकनिक पर 2 दिवसीय व्यवहारिक (हैंड्स-ऑन) कौशल विकास कार्यशाला" का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्देश्य फार्मेसी के छात्र-छात्राओं को प्रयोगात्मक कार्यों में प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करना और उन्हें आधुनिक शोध एवं औद्योगिक प्रयोगशालाओं में उपयोग होने वाली नवीनतम तकनीकों से अवगत कराना था। दो दिनों तक चलने वाली इस कार्यशाला में प्रतिभागियों को आणविक जीवविज्ञान की विभिन्न महत्त्वपूर्ण तकनीकों का गहन प्रशिक्षण दिया गया। इनमें शामिल थीं —

1. ट्राईज़ॉल (TRIzol) रिएजेंट का उपयोग करके आरएनए आइसोलेशन – जिसमें छात्रों ने कोशिकाओं से उच्च गुणवत्ता वाला आरएनए अलग करने की पूरी प्रक्रिया को सीखा।

2. सिलिका आधारित प्लास्मिड डीएनए आइसोलेशन (माइक्रोसेंट्रीफ्यूज स्पिन-कॉलम प्रारूप) – इस पद्धति के माध्यम से बैक्टीरिया से प्लास्मिड डीएनए को उच्च शुद्धता के साथ प्राप्त करने की तकनीक सिखाई गई।

3. एगरोज़ जेल इलेक्ट्रोफोरेसिस – इस प्रयोग में छात्रों ने डीएनए/आरएनए मॉलिक्यूल के आकार व आइसोलेशन का विश्लेषण करना सीखा।

इन सभी तकनीकों का प्रशिक्षण "हैंड्स-ऑन" प्रारूप में दिया गया, जिससे छात्र केवल सैद्धांतिक जानकारी ही नहीं बल्कि प्रयोगशाला में उन्हें व्यावहारिक रूप से लागू करने की क्षमता भी विकसित कर सके।

कार्यशाला का शुभारंभ विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो॰ अजय तनेजा द्वारा किया गया। अपने प्रेरणादायक संबोधन में उन्होंने कहा—RNA एवं DNA आइसोलेशन जैसी तकनीकों का अध्ययन फार्मेसी के छात्रों के लिए अत्यंत लाभकारी है, क्योंकि इससे न केवल उनका बहुआयामी कौशल विकास होगा, बल्कि उन्हें अनुसंधान एवं उद्योग जगत में रोजगार के बेहतर अवसर भी प्राप्त होंगे। यह प्रशिक्षण छात्रों को वैश्विक मानकों के अनुरूप प्रतिस्पर्धी बनाने में सहायक होगा।

विश्वविद्यालय के अकादमिक संकायाध्यक्ष प्रो॰ चंदना डे ने अपने संदेश में इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे आयोजन विद्यार्थियों के शैक्षणिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने फार्मेसी संकाय को इस प्रकार की गतिविधियों को नियमित रूप से आयोजित करने हेतु प्रोत्साहित किया।

संकाय निदेशक प्रो॰ शालिनी त्रिपाठी ने कार्यशाला का विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि इलेक्ट्रोफोरेसिस तकनीक जैविक एवं आणविक संरचनाओं के अध्ययन को न केवल सरल बनाती है, बल्कि शोध कार्यों में सटीकता और विश्वसनीयता भी बढ़ाती है। उन्होंने इस तरह की कार्यशालाओं के महत्व पर बल देते हुए छात्रों को अधिक से अधिक प्रयोगात्मक प्रशिक्षण में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। कार्यशाला के सफल संचालन में फैकल्टी ऑफ फार्मेसी के सभी शिक्षकगण एवं छात्र-छात्राओं की सक्रिय सहभागिता सराहनीय रही। छात्रों ने उत्साहपूर्वक प्रत्येक प्रयोग में प्रतिभाग किया और प्रशिक्षकों से विस्तृत मार्गदर्शन प्राप्त किया। इस दौरान उन्हें प्रयोगशाला सुरक्षा नियमों, उपकरणों के सही उपयोग, और शोध में नैतिक मानकों के पालन पर भी प्रशिक्षण दिया गया । कार्यशाला का समापन सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र वितरित करने के साथ किया गया।

PRESS RELEASE

भाषा विश्वविद्यालय में आणविक जीवविज्ञान पर दो दिवसीय कार्यशाला

August 14, 2025

लखनऊ। ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय में फार्मेसी संकाय द्वारा "रिलेवेंट मॉलिक्यूलर बायोलॉजी टेक्निक" विषय पर एक दो दिवसीय कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। 13 और 14 अगस्त को हुई इस कार्यशाला में छात्रों को आणविक जीवविज्ञान की अत्याधुनिक तकनीकों का व्यावहारिक (हैंड्स-ऑन) प्रशिक्षण दिया गया।

भाषा विश्वविद्यालय में अरबी भाषा की उपयोगिता पर व्याख्यान

प्रशिक्षण में शामिल प्रमुख तकनीकें

यह कार्यशाला छात्रों को आधुनिक शोध और औद्योगिक प्रयोगशालाओं में उपयोग होने वाली तकनीकों से परिचित कराने के लिए आयोजित की गई थी। इसमें छात्रों को कई महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं का गहन प्रशिक्षण मिला, जिनमें शामिल हैं:

RNA आइसोलेशन: TRIzol रिएजेंट का उपयोग करके कोशिकाओं से उच्च गुणवत्ता वाले RNA को अलग करने की प्रक्रिया।

प्लास्मिड DNA आइसोलेशन: बैक्टीरिया से उच्च शुद्धता वाले प्लास्मिड DNA को अलग करना।

एगरोज जेल इलेक्ट्रोफोरेसिस: DNA/RNA के आकार और विश्लेषण की महत्वपूर्ण तकनीक।

इन तकनीकों का प्रायोगिक अभ्यास छात्रों को दिया गया, जिससे उन्होंने सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ इन्हें प्रयोगशाला में लागू करने का कौशल भी विकसित किया।

भविष्य के लिए महत्वपूर्ण प्रशिक्षण

कुलपति प्रो अजय तनेजा ने कहा कि RNA और DNA आइसोलेशन जैसी तकनीकों का ज्ञान फार्मेसी के छात्रों के लिए अत्यंत उपयोगी है। यह उनके बहुआयामी कौशल को बढ़ाएगा और उन्हें अनुसंधान और उद्योग जगत में बेहतर रोजगार के अवसर प्रदान करेगा।

विभाग की संकायाध्यक्ष प्रो चंदना डे और निदेशक प्रो शालिनी त्रिपाठी ने भी ऐसे आयोजनों की सराहना करते हुए कहा कि ये छात्रों के शैक्षणिक और पेशेवर विकास के लिए अहम हैं। यह कार्यशाला छात्रों के उत्साह और शिक्षकों की सक्रिय भागीदारी के साथ संपन्न हुई, जिसमें सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र भी दिए गए।